B.A. HINDI HONOURSE PART – 3

PAPER – 8

"अलंकार"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

अलंकार

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है " आभूषण ".
मनुष्य सौंदर्य प्रेमी है, वह अपनी प्रत्येक वस्तु को सुसज्जित और अलंकृत देखना चाहता है। वह अपने कथन को भी शब्दों के सुंदर प्रयोग और विश्व उसकी विशिष्ट अर्थवत्ता से प्रभावी व सुंदर बनाना चाहता है। मनुष्य की यही प्रकृति काव्य में अलंकार कहलाती है।

1. वृत्यानुप्रास - जहां एक या अनेक वर्णों की अनेक बार आवृत्ति हो

उदाहरण–

"चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल - थल में "
यहां कोमल - वृत्ति के अनुसार ' च ' वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है। अतः वृत्यनुप्रास अलंकार है।

2. श्लेष अलंकार

जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है |

उदाहरण–

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

3. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है |

उदाहरण–

"जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं"

यहाँ पर 'तारे' शब्द दो बार आया है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

4. उपमा

समान धर्म के आधार पर जहाँ एक वस्तु की समानता या तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण–

"हरिपद कोमल कमल से"

5. रूपक

जहाँ उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप हो अर्थात् उपमेय और उपमान को एक रूप कह दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है;

उदाहरण–

"बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी"।

यहाँ अम्बर-पनघट, तारा-घट, ऊषा-नागरी में उपमेय उपमान एक हो गए हैं, अत: रूपक अलंकार है।

6. उत्प्रेक्षा

जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें जनु, मनु, मानो, जानो, इव, जैसे वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरण–

"पिउ सो कहेव सन्देसड़ा, हे भौंरा हे काग।
सो धनि विरही जरिमुई, तेहिक धुवाँ हम लाग"।।

यहाँ कौआ और भ्रमर के काले होने का वास्तविक कारण विरहिणी के विरहाग्नि में जल कर मरने का धुवाँ नहीं हो सकता है फिर भी उसे कारण माना गया है अत: उत्प्रेक्षा अलंकार है।

7. अतिशयोक्ति

जहाँ किसी विषयवस्तु का उक्ति चमत्कार द्वारा लोकमर्यादा के विरुद्ध बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है;

उदाहरण–

"हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
सारी लंका जरि गई, गए निशाचर भाग।"

यहाँ हनुमान की पूंछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भागने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होने से अतिशयोक्ति अलंकार है।

8. दीपक अलंकार

जब किसी पद में उपमेय (प्रस्तुत पदार्थ)तथा उपमान (अप्रस्तुत पदार्थ) दोनों के लिए एक ही साधारण धर्म होता है तो वहाँ दीपक अलंकार होता है।

उदाहरण–

कामिनी कन्त सों, जामिनी चन्द सों,

दामिनी पावस मेघ घटा सों

जाहिर चारिहु ओर जहान लसै,

हिन्दवान खुमान शिवा सों।

9. अर्थान्तरन्यास अलंकार

जहाँ सामान्य कथन का विशेष से या विशेष कथन का सामान्य से समर्थन किया जाए, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।सामान्य - अधिकव्यापी, जो बहुतों पर लागू हो। विशेष - अल्पव्यापी, जो थोड़े पर ही लागू हो।

उदाहरण-

"जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।

चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ।।"

10. प्रतिवस्तूपमा अलंकार

जब उपमेय और उपमान सम्बन्धी अलग-अलग वाक्यों में भिन्न-भिन्न शब्दों से एक ही अर्थ ध्वनित हो, तब प्रतिवस्तूपमा अलंकार होता है।

उदाहरण-

"तिनहि सुहाय न नगर बधावा।

चोरहिं चाँदनि रात न भावा॥"

यहाँ प्रथम और द्वितीय दोनों वाक्यों में रुचिकर न होने का भाव 'सुहाय न' और 'न भावा' दो भिन्न पदों से व्यक्त हुआ है।